आदिकाल के नामकरण पर विचार

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
तदर्थ शिक्षक, हिन्दी विभाग
एस० एस० कॉलेज, जहानाबाद।

विगत पाठ में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के द्वारा दिया गया नाम – 'वीरगाथा काल' सर्वमान्य क्यों नहीं हो सका। इसी क्रम में अनेक विद्वानों और समीक्षकों ने इस काल को अपने-अपने दृष्टिकोण से विभिन्न नामों से अभिहित किया है।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने अपने महत्वपूर्ण शोध ग्रंथ 'हिन्दी काव्यधारा' में उन्होंने इस काल को 'सिद्ध सामन्त युग' के नाम से अभिहित किया है। उनकी मान्यता है कि इस काल में दो प्रमुख प्रवृत्तियां दृष्टिगोचर होती हैं:- सिद्धों की वाणी और सामन्तों की स्तुति। सिद्धों की वाणी के अन्तर्गत बौद्ध तथा नाथ सिद्धों की, साथ ही जैन मुनियों की वाणियां आती हैं जिनमें रहस्य उपदेश और हठयोग की क्रिया एवं उनकी महिमा का विस्तार से वर्णन किया गया है। चूंकि इस काल के रचनाकारों में सिद्ध एवं नाथ सम्प्रदाय के योगियों की प्रधानता थी अतः उनके नाम पर सिद्ध को अपने नामकरण में सम्मिलित किया तथा सामन्तों की प्रशस्ति में भी काव्य रचे जा रहे थे अतः उनके आधार पर सामन्तों को भी अपने नामकरण में सम्मिलित किया और नाम दिया 'सिद्ध-सामन्तयुग'। किन्तु हिन्दी समाज इस नाम से भी संतुष्ट नहीं हो सका। उसके पीछे के कारणों पर ध्यान देना आवश्यक है। सर्वप्रथम तो इस नाम में ही विरोधाभास झलकता है जैसे ~~सिद्ध~~ सिद्ध जो स्वयं रचनाकार थे, उन्हें तो स्थान दी गयी किन्तु स्वयं सामन्त तो रचनाकार नहीं थे उन्हें भला क्यों नामकरण में सम्मिलित किया गया? अगर सिद्ध को इस नामकरण में स्थान मिला तो रचनाकार की हैसियत से चारणों को स्थान मिलना चाहिए था। दूसरी बात

वे स्वयं स्वीकार करते हैं कि ~~अपभ्रंश~~ अपभ्रंश को केवल हिन्दी की जननी नहीं माना जा सकता वरन अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं ~~का~~ का विकास इससे हुआ है। अतः इसपर केवल हिन्दी भाषियों का अधिकार नहीं स्वीकार किया जा सकता। पंडितजी ने जिनकी भी रचनाओं की चर्चा की है वे ~~सब~~ के सब अपभ्रंश की हैं। इस स्थिति में सिद्ध सामन्त युग नाम प्रश्न के घेरे में आ जाता है। जब नामकरण करना है तो भला हिन्दी की रचनाओं पर नामकरण होगा। अपभ्रंश को आधार मान कर किया गया यह नामकरण इसी लिए सर्वमान्य नहीं हो सका।

इसके बाद डॉ॰ रामकुमार वर्मा ने अपने ~~ग्रं~~ लब्ध प्रतिष्ठ ग्रंथ - 'हिन्दी साहित्य: युग और प्रवृत्तियां' में इस काल को चारण काल के नाम से पुकारा है। आचार्य शुक्ल ने लिखा है कि इस युग के अधिकांश कवि चारण थे। लगता है कि इसी को आधार बनाकर उन्होंने इसका नाम चारण काल दे दिया हो। विद्वानों का एक वर्ग इस नामकरण पर प्रश्न उठाता रहा है और इस नामकरण में हिचकता रहा है। उनका तर्क है कि डॉ० वर्मा की पुस्तक में लम्बे विवेचन और बड़े-बड़े तर्क देने के बाद [illegible] एक भी प्रामाणिक चारण कवि का उल्लेख नहीं है। इसके साथ ही इन्होंने ~~चा~~ चारण काल की जो सीमा रखी है उसमें संवत 1775 से 1795 तक की रचनाओं को भी सम्मिलित कर लिया है जबकि वे स्वयं इस काल की अधिकतम सीमा सं०. 1375 तक ही स्वीकार करते हैं। स्पष्ट है कि इस नामकरण के पीछे का आधार ही कमजोर है अतः इसे सहज ही स्वीकार नहीं किया जा सका।